بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۛ ۝٤ سَلٰمٌ ۛ قف هِيَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ۝٥ ع

अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये[6] वोह सलामती है सुब्ह् चमकने तक[7]

ايـاتها ٨ ۝ ٩٨ سُوۡرَةُ الۡبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٠ ۝ ركوعها ١

सूरए बय्यिनह मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

لَمۡ يَكُنِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ مُنۡفَكِّيۡنَ

किताबी काफ़िर[2] और मुश्रिक[3] अपना दीन छोड़ने को न थे

حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۝١ ۙ رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢ ۙ

जब तक उन के पास रोशन दलील न आए[4] वोह कौन वोह अल्लाह का रसूल[5] कि पाक सहीफ़े पढ़ता है[6]

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ ؕ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا

उन में सीधी बातें लिखी हैं[7] और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बा'द इस के कि वोह

جَآءَتۡهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۝٤ ؕ وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوا اللّٰهَ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ

रोशन दलील[8] उन के पास तशरीफ़ लाए[9] और उन लोगों को तो[10] येही हुक्म हुवा कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर

الدِّيۡنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيۡنُ

अ़क़ीदा लाते[11] एक त़रफ़ के हो कर[12] और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा

الۡقَيِّمَةِ ۝٥ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ فِيۡ

दीन है बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुश्रिक सब जहन्नम की

6 : जो अल्लाह तआ़ला ने इस साल के लिये मुक़द्दर फ़रमाया। 7 : बलाओं और आफ़तों से। 1 : "सूरए लम यकुन" इस को "सूरए बय्यिनह" भी कहते हैं, जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की एक रिवायत येह है कि मक्किय्या है, इस सूरत में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोरानवे कलिमे, तीन सो निनानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : यहूदो नसारा 3 : बुत परस्त 4 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़्रोज़ हों, क्यूं कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسۡلِیۡمَات की तशरीफ़ आवरी से पहले येह तमाम येही कहते थे कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वोह "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ फ़रमा न हों जिन का ज़िक्र तौरैत व इन्जील में है। 5 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 6 : या'नी कुरआने मजीद 7 : ह़क़ व अ़द्ल की 8 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 9 : मुराद येह है कि पहले से तो सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि जब "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ लाएं तो हम उन पर ईमान लाएंगे, लेकिन जब वोह नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़्रोज़ हुए तो बा'ज़ तो आप पर ईमान लाए और बा'ज़ ने ह़सदन व इ़नादन कुफ़्र इख़्तियार किया। 10 : तौरैत व इन्जील में 11 : इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर 12 : या'नी तमाम दीनों को छोड़ कर

www.dawateislami.net

نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِیَّةِ ؕ﴿۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ

आग में हैं हमेशा उस में रहेंगे वोही तमाम मख़्लूक़ में बदतर हैं बेशक जो

اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمْ خَیْرُ الْبَرِیَّةِ ؕ﴿۷﴾ جَزَآؤُهُمْ

ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं उन का सिला

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ

उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा हमेशा

اَبَدًا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّهٗ ﴿۸﴾ ع

रहें अल्लाह उन से राज़ी[13] और वोह उस से राज़ी[14] येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे[15]

ایاتها ٨ ﴿٩٩ سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِیَّةٌ ٩٣﴾ رکوعها ١

सूरए ज़िल्ज़ाल मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَ

जब ज़मीन थरथरा दी जाए[2] जैसा उस का थरथराना ठहरा है[3] और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे[4] और

قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ یَوْمَىٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ

आदमी कहे इसे क्या हुवा[5] उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी[6] इस लिये कि तुम्हारे रब

اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ یَوْمَىٕذٍ یَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ۬ لِّیُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾

ने उसे हुक्म भेजा[7] उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे[8] कई राह हो कर[9] ताकि अपना किया[10] दिखाए जाएं

ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़ हो कर **13 :** और उन के इताअ़त व इख़्लास से **14 :** उस के करम व अ़ता से **15 :** और उस की ना फ़रमानी से बचे। **1 :** सूरए "اِذَا زُلْزِلَت" जिस को "सूरए ज़ल्ज़ला" भी कहते हैं, मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, पेंतीस कलिमे और एक सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2 :** क़ियामत क़ाइम होने के नज़्दीक या रोज़े क़ियामत **3 :** और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए। **4 :** या'नी ख़ज़ाने और मुर्दे जो उस में हैं वोह सब निकल कर बाहर आ पड़ें। **5 :** कि ऐसी मुज़्तरिब हुई और इतना शदीद ज़ल्ज़ला आया कि जो कुछ इस के अन्दर था सब बाहर फेंक दिया। **6 :** और जो नेकी बदी उस पर की गई सब बयान करेगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औ़रत ने जो कुछ इस पर किया उस की गवाही देगी कहेगी : फ़ुलां रोज़ येह किया फ़ुलां रोज़ येह। (ترمذی) **7 :** कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अ़मल उस पर किये गए हैं उन की ख़बरें दे **8 :** मौक़िफ़े ह़िसाब से **9 :** कोई दहनी त़रफ़ से हो कर जन्नत की त़रफ़ जाएगा कोई बाईं जानिब से दोज़ख़ की त़रफ़। **10 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा।

www.dawateislami.net